RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.10 | October 2021 | pp. 127-131
Double-Blind Peer Reviewed/ Refereed Journal

रसेल के इन्द्रिय–प्रदत्त की अवधारणा

डॉ0 राजीव कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा।

रसेल का दार्शनिक चिन्तन ज्ञान के चतुष्कार सिद्धान्त से प्रारम्भ होता है। अपनी प्रथम पुस्तक दि प्रोब्लेम्स ऑफ फिलासफी में वे मूर की तरह ज्ञान की क्रिया एवं ज्ञान की वस्तु में भेद करते हैं। साथ ही वे यह भी मानते हैं कि ज्ञान में हमें इन्द्रिय–प्रदत्तों का ही प्रत्यक्ष बोध होता है। मूर ने इन्द्रिय–प्रदत्तों अर्थात, संवेधों को किसी न किसी प्रकार भौतिक वस्तुओं से संबद्ध माना था। उनके अनुसार संवेध संवेदना की क्रिया से अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं। किन्तु रसेल संवेध वस्तुओं को वैयक्तिक मानते हैं। उनके अनुसार जिस क्षण कोई व्यक्ति संवेध वस्तुओं का अनुभव करता है उसी क्षण तक उनका अस्तित्व रहता है। दूसरे व्यक्ति और दूसरे क्षण के संवेध उससे भिन्न होते हैं। रसेल के शब्दों में ''यदि मैं आँखे बन्द कर लूँ तो रंग समाप्त हो जाता है, यदि मैं मेज से हाथ हटा लूँ तो कठोरता की संवेदना खतम हो जाती है।''[1] यदि दृशते का अर्थ व्यक्तिगत संवेध लिया जाये तो रसेल बर्कल के सूत्र को सार्थक मानने को तैयार हैं। वे स्वयं कहते हैं कि बर्कले उन इन्द्रिय–प्रदत्तों को ठीक ही व्यक्तिगत मानते थे जिनके द्वारा हमें वृक्ष जैसी वस्तु का ज्ञान होता है। यदि वृक्ष न दिखलाई दे तो उनका अस्तित्व नहीं होगा। लेकिन इस बात में वे बर्कले से भिन्न हो जाते हैं कि इन्द्रिय–प्रदत्त हमारे एवं भौतिक वस्तुओं के बीच में मध्यस्थ है। भौतिक वस्तुयें हमारी प्रत्यक्षीकरण की क्रिया से अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है।

अब समस्या यह रह जाती है कि इन्द्रिय–प्रदत्तों से भिन्न भौतिक वस्तुओं का क्या स्वरूप रह जाता है एवं इन्द्रिय–प्रदत्तों से हम उन्हें किस प्रकार जानते हैं। रसेल कहते हैं कि हम भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व को कभी सिद्ध नहीं कर सकते हैं, हम इन्द्रिय–प्रदत्तों से आगे बढ़ने का कोई मार्ग नहीं पाते हैं, किन्तु भौतिक वस्तुवाद वह सरलतम प्राक्कल्पना है जिससे हम सामान्य इन्द्रिय–प्रत्यक्ष का लेखा–जोखा कर सकते हैं। ''सरलता के हर नियम की हम से यह माँग है कि हम स्वाभाविक दृष्टिकोण को अपनावें। इसके अनुसार स्वयं हम एवं हमारे इन्द्रिय–प्रदत्तों के अलावा वस्तुयें जिनका अस्तित्व हमारे प्रत्यक्षीकरण पर अबलम्बित नहीं है।'' भौतिक वस्तुओं की अज्ञेयता यद्यपि तर्कों द्वारा खण्डित नहीं की जा सकती है, किन्तु यह जरूरी नहीं है कि हम उसे सत्य मान बैठे।

इन्द्रिय–प्रदत्तों से स्वतंत्र भौतिक वस्तु के ज्ञान की संभावना पर विचार करते हुए रसेल ने लिखा है कि ज्ञान दो प्रकार का होता है– साक्षात ज्ञान एवं विवरणात्मक ज्ञान। साक्षात् ज्ञान हमें सीधे प्राप्त होता है। इसमें कोई माध्यम नहीं होता है, न अनुमान का सहारा लिया जाता है।[2]

इन्द्रिय–प्रदत्तों का ज्ञान इसी प्रकार है। हमारी चेतना के सामने इन्द्रिय–प्रदत्त ही आते हैं। हम उन्हें साक्षात देखते हैं। जैसे हमारे सामने मेज है। हम मेज का प्रत्यक्षीकरण करते है किन्तु मेज का साक्षात ज्ञान नहीं होता है। हमें मेज का रंग, आकार, कठोरता, चिकनापन इन्द्रिय संवेदन द्वारा प्राप्त होता है। ये सभी इन्द्रिय–प्रदत्त है।[3]

ये इन्द्रिय–प्रदत्त मेज का वर्णन करते हैं। इस तरह वास्तविक मेज का ज्ञान यद्यपि साक्षात नहीं होता है किन्तु इन्द्रिय–प्रदत्तों का साक्षात् ज्ञान वस्तु के अस्तित्व को मानने के लिए बाध्य करते हैं। साक्षात् ज्ञान सत्य का ज्ञान है। प्रत्येक वर्णन ज्ञान में सत्य का ज्ञान सम्मिलित रहता है।

सत्यों के ज्ञान में इन्द्रिय–प्रदत्तों के साक्षात ज्ञान के अतिरिक्त कुछ अन्य वस्तुओं का ज्ञान भी सम्मिलित रहता है। रसेल इन्हें ''सामान्य'' कहते हैं। ये सामान्य एक प्रकार के अपकृष्ट प्रत्यय हैं। जैसे– सफेदी, न्याय, अंदर, बाई ओर आदि।

---

[1] बर्टेण्ड रसेल। दि प्रोब्लेम्स ऑफ फिलासफी। आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस। 1956 पृ०दृ–42
[2] बर्टेण्ड रसेल। दि प्रोब्लेम्स ऑफ फिलासफी। आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस। पृ0–25
[3] वही। पृ०– 25

यद्यपि इनका देश काल में अस्तित्व नहीं है एवं न इनके इन्द्रिय–प्रदत्त प्राप्त होते हैं किन्तु इनका अस्तित्व है एवं ये प्रत्येक सत्य ज्ञान में सम्मिलित रहते हैं। प्लेटो ने भी ऐसे सामान्यों का अस्तित्व माना था किन्तु उसके सामान्यों में भाव–वाचक संज्ञायें एवं विशेषण ही थे, रसेल क्रियाओं एवं संबंध कारकों को उनमें सम्मिलित करता है। रसेल के अनुसार इन सामान्यों का हमें साक्षात, ज्ञान होता है।

ज्ञान के इस विश्लेषण के अनुसार हमें वस्तु का वर्णन ज्ञान प्राप्त होता है जिसमें इन्द्रिय–प्रदत्तों एवं सामान्यों का साक्षात, ज्ञान सम्मिलित रहता है। इस प्रकार रसेल दार्शनिक जीवन के प्रथम स्तर पर ज्ञान के चतुष्कारक सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। वे चारो कारक है – (1) चेतना (2) इन्द्रिय–प्रदत्तों का साक्षात् ज्ञान (3) सामान्यों का साक्षात् ज्ञान एवं (4) भौतिक वस्तुओं का वर्णन ज्ञान। ज्ञान के इन चारो कारको की विशद व्याख्या रसेल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''दि प्रोब्लेम्स ऑफ फिलासफी'' में ''साक्षात् परिचय ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान'' शीर्षक के अन्तर्गत किया है।

साक्षात् परिचय–ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान :

साक्षात् परिचय–ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान के अन्तर को रसेल ने प्रायः सदा मान्यता दी है, तथा इनका प्रसंगानुसार उपयोग भी किया है। ''विवरण'' तो उनके तार्किक ढंगों में एक है। यहाँ हम परिचय ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करेंगे, तथा उसी संदर्भ में उनके भेद एवं सहयोग को भी स्पष्ट है करेंगे।

सामान्यतः हमें दो प्रकार के ज्ञान उपलब्ध होते हैं – ''सत्यों का ज्ञान'' तथा ''वस्तुओं का ज्ञान''। परिचयात्मक एवं विवरणात्मक ज्ञान का सम्बन्ध सत्यों के ज्ञान से नहीं है। कहा जा सकता है कि वस्तुओं का ज्ञान दो प्रकार से सम्भव होता है, एक साक्षात परिचय द्वारा तथा दूसरा विवरण द्वारा। परिचय के द्वारा प्राप्त ज्ञान सत्यों के ज्ञान से सरल होता है, तथा उस पर निर्भर नहीं करता। हमें किसी वस्तु से परिचय हो सकता है बिना उस वस्तु के सम्बन्ध में किसी सत्य के ज्ञान के। किन्तु, विवरण के द्वारा प्राप्त ज्ञान में प्रायः सदा सत्यों के ज्ञान की प्रासंगिकता होती है। किसी वस्तु का विवरणात्मक ज्ञान में उस वस्तु के विषय में कुछ सत्यों की जानकारी अनिवार्य प्रतीत होती हैं। फिर भी, यह तो कहा ही जा सकता है कि परिचय तथा विवरणा वस्तुओं के सम्बन्ध में ही ज्ञान पाने के दो ढंग है। पहले हम दोनों में एक प्रारंभिक के भेद दिखा लेंगे और उसके बाद दोनों की अलग–अलग विवेचना करेंगे।

साक्षात् परिचय–ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान में एक प्रारम्भिक भेद :

दोनों प्रकार से प्राप्त ज्ञान के विशद विवरण प्रस्तुत करने के पहले दोनों में एक प्रारम्भिक भेद कर लेना अनिवार्य है। इन दोनों के सामान्य भेद की एक प्रारम्भिक समझ के आधार पर ही दोनों के स्वरूप की पृथक–पृथक विवेचना वांछनीय है।

इस भेद को स्पष्ट करने के लिए एक साधारण प्रयक्ष का उदाहरण लें। मान लें हम एक ''मेज'' देख रहे हैं। इस देखने में ऐसे कौन से तत्व है जिसकी साक्षात् प्रतीति हो रही है। यहाँ साक्षात् प्रतीति का अर्थ ऐसी अवगति से है जो बिना किसी माध्यम के प्राप्त हो, और न तो वह प्रतीति किन्हीं पूर्वज्ञात सत्यों पर आधारित हो। इस अर्थ में हमें ''मेज'' की साक्षात् प्रतीति नहीं होती क्योंकि हमारी प्रत्यक्ष–सम्बन्धी संवेदना में ''मेज'' को देखने की क्षमता निहित नहीं है। अतः हमें बिना किसी माध्यम के साक्षात् प्रतीति हो रही है, रंग के एक धब्बे की, एक आकार की, एक रूप की आदि। यदि हम मेज को स्पर्श करें तो ''मेज'' की साक्षात् प्रतीति नहीं होती, बल्कि एक कड़ेपन की साक्षात् प्रतीति होती है। रंग का धब्बा, आकार, रूप, कड़ापन आदि ''इन्द्रिय–प्रदत्त'' कहे गये हैं। अतः ''मेज'' के प्रत्यक्ष में इन इन्द्रिय–प्रदत्तों की साक्षात प्रतीति हो रही है।

यह ठीक है कि इन प्रदत्तों के विषय में बहुत कुछ कहा जाता है। जैसे वहा जा सकता है कि जो रंग हमने देखा वह भूरा है अथवा जो आकार हमने देखा वह चतुर्भुणाकार है। किन्तु इस तरह की सभी उक्तियाँ उन प्रदत्तों के विषय में भले हो, उन उक्तियों के आधार पर रंग या आकार की साक्षात प्रतीति नहीं होती। बल्कि जब हमें रंग या आकार की साक्षात् प्रतीति होती हैं तो हमें उस रंग या आकार की अवगति हो जाती है, उसकी जानकारी प्राप्त हो जाती है। वह जानकारी किसी रूप में भी रंग या आकार के विषय में कही गयी इन उक्तियों पर आधारित नहीं है। रंग या आकार की जानकारी साक्षात् एवं तात्कालिक होती है। अतः कहा जा सकता है कि ''मेज'' के प्रत्यक्ष में जिन इन्द्रिय–प्रदत्तों की साक्षात् प्रतीति होती है, उनके विषय में कहा जा सकता है कि उनका ज्ञान साक्षात् परिचय, ज्ञान है किन्तु, ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मेज के प्रत्यक्ष में जो मेज का ज्ञान प्राप्त होता है वह साक्षात् ज्ञान नहीं है। मेज का साक्षात् ज्ञान नहीं होता इसे अनेक प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता। ऐसी कोई मानसिक स्थिति का निर्देश नहीं किया जा सकता जिसमें मेज का साक्षात् ज्ञान होता है। वस्तुतः जिसका साक्षात् ज्ञान होता है उस पर संशय नहीं किया जा सकता। जो साक्षात् प्रतीति में ग्राह्य है वह संशय से परे है। किन्तु अनेकों ढंग है जिससे तर्कतः ''मेज'' पर ''मेज है'' की सम्भावना पर संशय किया जा सकता है। इससे भी यह

स्पष्ट होता है कि मेज का साक्षात् ज्ञान नहीं होता। रसेल के अनुसार वस्तुतः ''मेज'' का ज्ञान अथवा ''भौतिक वस्तु'' का ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान कहा जा सकता है, क्योंकि यह ज्ञान कुछ विवरणो माध्यम से ही प्राप्त होता है। ''मेज'' एक ऐसी वस्तु है जिसका ज्ञान उसके प्रत्यक्ष में प्रदत्त इन्द्रिय–प्रदत्तो ं के माध्यम से होता है। मेज का ज्ञान इन्द्रिय–प्रदत्तों के अनुरूप विवरणों पर निर्भर है। मेज के विषय में किसी ज्ञान के लिए हमें मेज के सम्बन्ध में कुछ ऐसे सत्यों की जानकारी अनिवार्य है, जो सत्य उन तत्वों पर निर्भर है जिनका हमें परिचय ज्ञान प्राप्त है। वस्तुतः मेज के सम्बन्ध में हमारे सभी ज्ञान सत्यों के ज्ञान है – सभी एक विवरण है, तथा हम यह भी मान कर चलते हैं कि एक ऐसी वस्तु है जिस पर यह विवरण लगता है। उस वस्तु को हम साक्षात् ढंग से नहीं जानते, ''वस्तु'' का परिचय–ज्ञान नहीं होता। वस्तु के विषय में हमारा ज्ञान विवरणों पर आधारित है। इस अर्थ में वस्तु का ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान है।

साक्षात् परिचय–ज्ञान :

रसेल ''परिचय ज्ञान'' को परिभाषित तो नहीं करते, किन्तु उसका बड़ा ही विशिष्ट विवरण देते हैं। रसेल के अनुसार यह ज्ञान बड़ा ही सरल ज्ञान है, क्योंकि यह बिना किसी माध्यम के बिना किसी अन्य उपकरण के सहारा के तात्कालिक प्राप्त होता है। इसी कारण रसेल कहते हैं कि यह ऐसा ज्ञान है जिसकी हो साक्षात, प्रतीति होती है। हमें साक्षात् परिचय–ज्ञान तब होता है जब ''हमारा'' क्सिी वस्तु से साक्षात् ज्ञानात्मक सम्बन्ध होता है। ज्ञानात्मक सम्बन्ध का अर्थ है कि विषयी और विषय में जो सम्बन्ध स्थापित होता है, उसमें विषय की कुछ अपगति होती है। साक्षात् का स्पष्ट अर्थ तो यह है कि यह अवगति तात्कालिक तथा बिना किसी माध्यम के है। इसके अतिरिक्त ''साक्षात्'' शब्द में एक और अर्थ निहित है। यह साक्षात् सम्बन्ध इस कारण है कि यह सम्बन्ध ऐसा नहीं है कि उस सम्बन्ध के आधार पर निर्णयों का निर्माण हो, बल्कि यह एक ऐसा सम्बन्ध है जिसमें एक प्रकार से विषय की प्रदत्ता है। सामान्यतः जब हम कहते हैं कि विषयी ''क'' को विषय ''ख'' का साक्षात, परिषय–ज्ञान है, तो इस कथन का विपरीत कथन है कि विषय ''ख'' विषयी ''क'' को प्रदत्त हुआ है। अर्थात् सामान्यतः जब परिचय ज्ञान होता है, तो इसका अर्थ है कि कोई विषय साक्षात् ढंग से विषयी के सामने प्रकट होता है – एक प्रकार से प्रदत्त होता है।

किन्तु यहाँ एक स्पष्टीकरण अनिवार्य है। ''परिचय–ज्ञान'' तथा प्रदत्तता सर्वथा एक नहीं है। रसेल ऐसा नहीं मानते हैं कि हर परिचय–ज्ञान में बाहर से कुछ प्रदत्त होता है। नहीं, कुछ ऐसे भी उदाहरण हो सकते हैं कि जहाँ हमें परिचय–ज्ञान हो किन्तु बाहर से कुछ प्रदत्त नहीं हुआ हो। उदाहरणतः एकाएक कोई स्मृति उभर आती है वह भी परिचय–ज्ञान है, किन्तु वहाँ कुछ बाहर से प्रदत्त नहीं हुआ है। यह ठीक है कि रसेल किसी न किसी रूप में विषयी एवं विषय के द्वैत को स्वीकर कर अग्रसर होते हैं, किन्तु परिचय के संदर्भ में प्रदत्तता का उल्लेख करने से उनका यह तात्पर्य नहीं कि दोनों अनिवार्यतः एक है। उनका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि परिचय–ज्ञान में हमें किसी विषय की साक्षात् अवगति होती है, वह विषय साक्षात् रूप में विषयों की अवगति में उजागर होता है, प्रगट होता है। बाहर से कुछ प्रदत्त हो ही, यह अनिवार्य नहीं है।

किन विषयों का साक्षात् परिचय–ज्ञान होता है?

साक्षात् परिचय–ज्ञान का स्वरूप पूर्णतया स्पष्ट करने के लिए यह जानना अनिवार्य है कि किन–किन विषयों का ज्ञान परिचय से प्राप्त होता है। वस्तुतः रसेल ने स्वयं यह बताया है कि वे तत्व क्या हैं जिनका ज्ञान हमें परिचय से प्राप्त होता है। हम अब उन उदाहरणों को स्पष्ट करेंगे।

सर्वप्रथम तो यह कहा ही जा सकता है कि इन्द्रिय–प्रदत्त सबसे सामान्य उदाहरण है ऐसे तत्वों के जिनका ज्ञान परिचय से होता है। परिचय से ज्ञात विषयों में इन्द्रिय–प्रदत्त सबसे प्रमुख तथा सबसे सामान्य उदाहरण है। यह परिचय–ज्ञान का सबसे स्पष्ट उदाहरण भी है, जिसके फलस्वरूप कुछ विचारक तो इन्हें ही परिचय–ज्ञान का एकमात्र उदाहरण मान लेते हैं, क्योंकि जब भी इसके उदाहरण की माँग होती है तो लोग प्रायः सदा ही इन्द्रिय–प्रदत्तों का ही उदाहरण देते हैं। किन्तु, रसेल कहते हैं कि ऐसा करना परिचय–ज्ञान की सीमा को आवश्यकता से अधिक सीमित कर देना है। एक तो यह सीमा इस कारण हो जाती है कि उस अवस्था में तो परिचय–ज्ञान इस वर्तमान क्षण तक सीमित हो जाता। इतना ही नहीं, यदि यह कहा जाय कि केवल इन्द्रिय प्रदत्तों का ज्ञान परिचय–ज्ञान है, तो इन्द्रिय–प्रदत्तों के विषय में किसी सत्य का ज्ञान भी नहीं हो पायेगा, क्योंकि सत्यों के ज्ञान के लिए ऐसे तत्वों के परिचय–ज्ञान की आवश्यकता होती है जो इन्द्रिय–प्रदत्तों से सर्वथा भिन्न है। सत्यों का ज्ञान परिचय–ज्ञान पर एक प्रकार से निर्भर होता है, तथा जिनका वहाँ परिचय–ज्ञान होता है, पे सामान्य होते हैं। अतः रसेल का कहना है कि जिनका हमें परिचय–ज्ञान होता है, उनका सबसे स्पष्ट उदाहरण तो इन्द्रिय–प्रदत्त अवश्य है, किन्तु ऐसे अन्य तत्व और हैं जिन का ज्ञान परिचय से प्राप्त होता है।

रसेल के अनुसार इन्द्रिय–प्रदत्त के परे जो ज्ञान परिचय से प्राप्त होता है उसमें सर्वप्रथम वैसे ज्ञान आते हैं जिनका परिचय–ज्ञान स्मृति के द्वारा होता है यह तो सर्वविदित है कि भूत में देखी हुई बातों को हम स्मरण करते ही हैं। ऐसी बातें जिन्हें पहले कभी इन्द्रियों ने पकड़ा था, कभी–कभी वर्तमान में उपस्थित हो जाती है जिन्हें हम स्मृति कहते हैं। इस स्मृति में जो भी उपस्थित होता है उसका हमें साक्षात ज्ञान होता है, क्योंकि स्मृति भी किसी माध्यम या किसी अनुमान पर नहीं है। यहाँ विषय है ''भूत में देखी गयी या सुनी वस्तु। ''इस विषय की वर्तमान में जो साक्षात् अवगति होती है वही स्मृति है। यही एत्मात्र ढंग है जिससे भूत या ज्ञान सम्भव है।

परिचय–ज्ञान का तीसरा उदाहरण वह ज्ञान है जो अन्तर्निरीक्षण के द्वारा प्राप्त होता। यहाँ रसेल ''अन्तर्निरीक्षण शब्द का एक विशिष्ट प्रयोग करते हैं। उनका यह अन्तर्निरीक्षण मनोवैज्ञानिक अन्तर्निरीक्षण जैसा होते हुए भी उससे भिन्न है। रसेल कहते हैं कि जब हमें किसी वस्तु की अवगति होती है, तो यह भी अवगति होती है कि मुझे उस वस्तु की अवगति है। उदाहरणतः अभी में इस कलम को देख रहा हूँ। कलम की अवगति के साथ मुझे यह भी अवगति होती है कि मैं इस कलम को देख रहा हूँ। ''कलम'' के साथ ''कलम को देखने'' की भी अवगति हो रही है। यह ''कलम को देखने की अवगति'' परिचय–ज्ञान है क्योंकि यहाँ भी साक्षात् ज्ञान हो रहा है। मुझे ''दर्द'' होता है, या ''सुख'' मिलता है, या ''भूख'' लगती है। यहाँ दर्द, सुख, भूख के साथ इस तथ्य का भी साक्षात् परिचय प्राप्त होता है कि ''मुझे दर्द है'', ''मुझे सुख है'' अथवा ''मुझे भुख है।''

रसेल का कहना है कि इसी प्रकार के परिचय–ज्ञान से हमें सभी मानसिक तत्वों का ज्ञान होता है। रसेल के अनुसार इस प्रकार परिचयात्मक ज्ञान को ''आत्म–चेतना'' भी कहा जा सकता है। रसेल के अनुसार इस प्रकार के ज्ञान का एक विशेष महत्व है। इसी के द्वारा व्यक्ति को अपने मानसिक विषय–वस्तुओं का ज्ञान होता है, तथा इसी ज्ञान के आधार पर हम यह भी अनुमानतः जान पाते हैं कि मेरे मन के अतिरिक्त अन्य मन भी है।

विवरणात्मक ज्ञान :

विवरण रसेल के ज्ञानमीमांसीय एवं तार्किक चिन्तन का एक केन्द्रीय पहलू है, हमे उस पर कुछ विचार करना भी है, किन्तु यहाँ हम विवरण प्रस्तुत करने वालों ''उक्तियों'' का विवलेषण नहीं कर रहे है, यहाँ हम मात्र यह देखना चाहते हैं कि किस प्रकार विवरण के द्वारा भी ज्ञान प्राप्त होता है।

हमने परिचयात्मक ज्ञान की विवेचना में देखा है कि हमें भौतिक वस्तुओं तथा अन्य मन आदि का ज्ञान साक्षात् परिचय से नहीं प्राप्त होता। साक्षात् परिचय से इन्द्रिय–प्रदत्तों का ज्ञान होता है, उनके द्वारा सूचित होने वाली वस्तु का नहीं। तो भौतिक वस्तुओं अन्य मन आदि का ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? रसेल का कहना है कि वह ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान है।

रसेल के अनुसार विवरण का अर्थ वैसा वाक्यांश है, जो या तो ''कोई ऐसा, एक ऐसा या कोई इस प्रकार का'' या ''वह ऐसा या वह इस प्रकार का'' के रूप का हो। ''कोई ऐसा'' वाले वाक्यांश को रसेल अनेकार्थक अथवा अनिश्चित विवरण कहते हैं, तथा ''वह इस प्रकार का'' जैसे वाक्यांश को निश्चित विवरण कहते हैं। उदाहरणतः यदि हम कहते हैं ''एक व्यक्ति'' अथवा ''कोई किताब'', तो यह अनेकार्थक या अनिश्चित विवरण कहा जायगा, तथा जब हम कहते हैं ''वह लोहे के नकाब वाला व्यक्ति'' ''मेघदूत का रचयिता'' ''वह व्यक्ति'' आदि तो यह निश्चित विवरण है। पहले उदाहरण में हम ''एक व्यक्ति'' के विषय में कह रहे हैं, वहाँ यह निश्चित नहीं है कि वह व्यक्ति कौन है। उसी प्रकार ''कोई किताब'' से किती भी पुस्तक को सूचित किया जा सकता है। यह विवरण अनिश्चित है, अनेक को सूचित करने के कारण अनेकार्थक। किन्तु, दूसरे प्रकार के उदाहरण में किसी निश्चित व्यक्ति को सूचित किया जा रहा है, अतः उस वाक्यांश में जो विवरण प्रस्तुत है वह निश्चित है।

हमारे जो सामान्य विवरणात्मक ज्ञान होते हैं वे प्रायः सदा ही निश्चित विवरण जैसे ही होते हैं, क्योंकि सामान्यतः जहाँ विवरण के द्वारा प्राप्त ज्ञान की बात करते हैं, वहाँ हमारा यह ध्यान रहता ही है कि इस विवरण के अनुरूप कोई निश्चित व्यक्ति या वस्तु है। अतः ''विवरणात्मक ज्ञान'' की विवेचना में हम सामान्यतः निश्चित विवरण की ही बात करते हैं, तथा ''विवरण'' से सामान्यतः ''निश्चित विवरण'' का ही बोध करते हैं।

अतः रसेल कहते हैं कि जब हमें किसी वस्तु का ज्ञान विवरण के द्वारा प्राप्त होता है तो वहाँ हम यह जान जाते हैं कि ''वह वस्तु इस प्रकार का'' है। इसका अर्थ है कि हम यह जान जाते हैं कि कोई एक वस्तु है, जिसमें कोई विशेष गुण या लक्षण है, जो गुण या लक्षण उसी में है किसी अन्य में नहीं। सामान्यतः ऐसे उदाहरणों में यह भी निहित रहता है कि उस ''वस्तु'' का हमें परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। इन बातों को उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। हम कहते हैं'' मेघदूत का रचयिता''। इस वाक्यांश के कहने पर यदि कोई ज्ञान मिलता है तो वह यही है कि इस विशेष लक्षण को धारण

करनेवाला कोई एक व्यक्ति अवश्य है, जिसमें हमारा परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। इस वाक्यांश के जानने पर उस व्यक्ति के विषय में अनेक कथनों का ज्ञान हो जाता है, किन्तु उसका साक्षात् , परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। किसी–किसी उदाहरण में तो परिचय हो भी सकता है, किन्तु फिर भी वह साक्षात परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। रसेल इसे एक सरल उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। हम यह कह सकते हैं कि जिस प्रत्याशी को सर्वाधिक भोट मिलेंगे वह विजय प्राप्त करेगा। इससे विवरणात्मक ज्ञान प्राप्त होता है। हम जान जाते हैं एक व्यक्ति ऐसा होगा जिसे सर्वाधिक भोट मिलेंगे और वह जीतेगा। सम्भवतः जीतनेवाले व्यक्ति जो अन्ततः जीतेगा– उससे हमारा परिचय भी हो, किन्तु यह परिचय सर्वाधिक भोट प्राप्त करनेवाले तथा जीतनेवाले व्यक्ति का साक्षात परिचय ज्ञान नहीं है। उस प्रारम्भिक परिचय में हमें इस प्रकार के वाक्य का ज्ञान नहीं है कि ''यही सर्वाधिक मत प्राप्त करने वाला व्यक्ति है।'' अतः जब हम कहते हैं कि ''मेघदूत का रचयिता है'' या ''लोहे के नकाब वाला व्यक्ति है'' तो हम यह जान जाते हैं कि एक व्यकित है जो मेघदूत का रचयिता है अथवा लोहे के नकाब वाला व्यक्ति है।

विवरणात्मक ज्ञान को इतना महत्व देने का एक विशेष कारण प्रतीत होता है। यह कहा जा सकता है कि इन्हें महत्व रसेल शायद इसी कारण देते हैं कि उन्हें लगता है कि साधारणतः सामान्य जातिवाचक शब्द, तथा व्यक्तिवाचक नाम आदि वस्तुतः विवरण है। जैसे व्यक्तिवाचक संज्ञाओं अथवा नामों के विषय में सोचें। रसेल का कहना है कि किसी नाम या व्यक्तिवाचक संज्ञा कहने पर जो किसी के मन में विचार उत्पन्न होता है उसे यदि व्यक्त किया जाय तो वह एक विवरणात्मक वाक्य या वाक्यांश ही होगा। वह नाम विभिन्न श्रोताओं के मन में भिन्न–भिन्न विचार प्रस्तुत करेगा जिसके फलस्वरूप यह नाम विभिन्न श्रोताओं के लिए भिन्न–भिन्न विवरण होगा – उनमें समानता बस इतनी ही रहेगी कि वे सब उसी व्यक्ति या वस्तु को सूचित होगा करते हैं, जिसे वह नाम सूचित करता है।

संदर्भ ग्रंथो की सूची :–

1. The Problems of Philosophy ; 2nd ed. London; George Allen and Unwin; 1946; Imp 1964
2. Our Knowledge of the External World; London; George Allen and Unwin; 1926.
3. The Analysis of Mind; London; George Allen and Unwin; 1921; Imp 1961.
4. An Outline of Philosophy; London; George Allen and Unwin; 1927.
5. Human Knowledge (Its scope and Limit); London; George Allen and Unwin; 1948; Imp 1966.
6. An Enquiry into Meaning and Truth; London; George Allen and Unwin; 1940; Imp 1961.
7. History of Western Philosophy; 2nd ed. London; George Allen and Unwin; 1961.
8. “On Denoting”; Mind; 1905.
9. “The Relation of Sense-data to Physics” in Mysticism and Logic; 1914.
10. “The Ultimate Constituents Matter” in Mysticism and Logic; 1959
11. “The Philosophy of Logical Atomism” Monist 1918-19. Reprinted in Marsh.
12. “Descriptions”, in Introduction to Mathematical Philosophy, Allen & Unwin, London; 1919.